

अंतर्मन के गहरे ज़ख्म

➤➤ 6 प्रकार के दुःख

➤➤ _ ➤➤ तन की बीमारी

→ बीमारी के समय ही योगी की परीक्षा होती है

→ यह संकल्प करो बीमारी के समय :-

- “वाह व्याधि वाह”
- अच्छा है... बोझ कम हो रहा है.. विकर्म विनाश हो रहे हैं
- विघन विनाशक का सर्टिफिकेट देने के लिए यह बीमारी आई है
- बीमारी से गुजरने के बाद हम वो नहीं रहेंगे, जो पहले थे... और

ज्यादा शक्तिशाली बन जायेंगे...

- अनुभवीमूरत बनाने के लिए आई है यह बीमारी
- बीमारी का काम है आना... और हमारा काम है अचल अडोल

रहना

➤➤ _ ➤➤ व्यर्थ संकल्प

→ समर्थ संकल्पों के अकाल की वजह से व्यर्थ संकल्प चलते हैं

→ अगर अनुकूल परिस्थितियों में भी बाबा के महावाक्य याद नहीं आते

तो

- क्या प्रतिकूल परिस्थितियों में बाबा के महावाक्य याद आयेंगे ?

→ अगर जीवन में कोई भी दुःख है तो

- श्रीमत से अभी कोसों दूर हैं
- ज्ञान की पूरी समझ नहीं है

➤➤ _ ➤➤ विनाशी धन की कमी

→ जिसके पास सूक्ष्म धन है, उसके पीछे स्थूल धन दौड़कर आएगा

- अपनी GREED को NEED मत कहो

➤➤ _ ➤➤ सम्बन्ध संपर्क का दुःख

→ एक दुसरे से बहुत ज्यादा अपेक्षाएं (EXPECTATIONS)

- सम्बंधो में DETACHED रहे
- ZERO EXPECTATION POLICY
- दूसरों से प्रेम, CARE, ATTENTION की भीख मत मांगो
- बिन मांगे मोती मिले, मांगे , मिले न भीख

- इस संसार में एक परमात्मा के अतिरिक्त हमें किसी से कुछ

नहीं चाहिए

➡ ➡ कमजोर स्वभाव संस्कार

→ अज्ञान काल के संस्कार जा ही नहीं रहे

➡ ➡ वायुमंडल / वाइब्रेशन

→ संकल्प से ही वृत्ति और वृत्ति से ही वायुमंडल बनता है

➤➤ 7 प्रकार के अंतर्मन के ज़ख्म

➡ ➡ अपमान का घाव

→ जिस आत्मा को मान की जितनी अधिक कामना हो

- उसे अपमान भी उतना ही अधिक अनुभव होता है

→ यदि अपमान से मुक्त होना हो तो

- मान से भी मुक्त होना होगा

→ जिसका अहंकार शिखर पर है... और उस अपमान को जब चोट लगती है...

- तो बहुत पीड़ा होती है

➡ ➡ अपमान के घाव से मुक्त होने के लिए....

→ कर्मों की गुह्य गति स्मृति में लायें

■ जो भी आत्मा हमारे साथ जो कुछ भी कर रही है... उसका हमने ही आह्वान किया है

→ ड्रामा का ज्ञान स्मृति में लायें

→ शुभ भावना रखें क्योंकि

- हम तो ग्यानी तू योगी तू आत्मा हैं
- हम भगवान के बच्चे हैं
- दुःख लेना श्रीमत नहीं है

→ यह पेपर है

- आपके ज्ञान और योग की पराकाष्ठा check करने के लिए

→ “मैं जगत माता हूँ” - स्वयं को इस स्वमान में स्थित कीजिये

- मुझे उसकी भी पालना करनी है

→ अगर दूसरा अपने ज्ञान और योग को भूल गया है

- पर मैं अपने ज्ञान और योग को क्यों भूलूँ ?

→ सामने वाले की मनोस्थिति / मनोदशा को समझिये

→ सामने वाले को क्षमा कर दीजिये क्योंकि

- यह परमात्मा आज्ञा है
- हम शांत रहे
- हमारा योग अच्छा हो / DISTURB न हो
- अपराधी के लिए सबसे बड़ा दंड है क्षमा

→ LET IT GO

- पकड़ के मत रखो जोर से

→ सीख सीख झुक झुक मर मर

» _ » झूठा आरोप

→ सत्य की नांव हिलेगी, डुलेगी ... पर डूबेगी नहीं

- हर पेपर मुझे परिपक्व और शक्तिशाली बनाने आया है

» _ » असहयोग

→ एक परमात्मा के अतिरिक्त हमारा कोई सहारा नहीं

- किसी से सहयोग की भीख नहीं मांगेंगे

→ सहयोग के बदले सहयोग की उम्मीद न रखो

- अपने सहयोग को निष्काम बनाओ

» _ » अविश्वास का घाव

→ फीलिंग देवी नहीं बनना है

→ किसी पर इतना विश्वास भी मत करो की वह विश्वासघात कर दे

» _ » धोखा

→ भगवान से पालना लेकर भी आत्माएं भगवान को छोड़कर चली

गयी... तो फिर हम क्या चीज़ हैं ?

- एक परमात्मा के अतिरिक्त हमारा कोई भी सगा नहीं है

» _ » निंदा

→ निंदा हमारी जो करे, मित्र हमारा सो होए....

→ हर पेपर लेने वाली आत्मा हमें सम्पूर्णता के और नज़दीक ले जाने

आई है

- सहन शक्ति बढाने आये हैं

→ निंदा को पी जाइए

→ एक व्यक्ति को 3 अवस्थाओं से गुज़रना पडता है

- हंसेगे
- विरोध करेंगे

- ACEEPT करेंगे

➡ ➡ ➡ विरोध / CRITICISM

→ आलोचना के समय हिम्मत नहीं हारनी है

- खुद को थाम के रखना है

